क्या तू मुझे प्यार करता है?

बरकत पाने का राज़

kyā tū mujhe pyār kartā hai? barkat pāne kā rāz

Do You Love Me? Receiving In Full Measure

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 36]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from R. Gunther https://www.freebibleimages.org/illustrations/rg-resurrection-galilee/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

अच्छे चरवाहे की पुकार सुनो	1
अच्छे चरवाहे की बरकत पाओ	3
अच्छे चरवाहे की तक़वियत पाओ	4
अच्छे चरवाहे का प्यार क़बूल करो	7
अच्छे चरवाहे की फ़ितरत अपनाओ	8
आपसी जलन छोड़ दो	11
अच्छे चरवाहे की सच्चाई अपनाओ	13
इंजील, यूहन्ना 21	14

जुमे के दिन ईसा मसीह को सज़ाए-मौत दी गई। शागिर्द डर के मारे छुप गए। उनके ख़ाब धूल में मिलाए गए थे। वह सन्न रह गए। आगे कोई रास्ता नहीं दिख रहा था।

हफ़्ते का दिन गुज़र गया। फिर इतवार का दिन शुरू हुआ। उस दिन कुछ लोगों ने अचानक ईसा मसीह को देखा। और वह भूत नहीं था। उसका पक्का जिस्म था। बेशक वह जगह और वक़्त का पाबंद नहीं था, लेकिन वह खाना खा सकता था। उसकी आवाज़ और अंदाज़—सब कुछ वैसा ही था। शागिर्द उसे छू सकते थे, बिलकुल आम आदमी की तरह। तब उसने शागिर्दों को फ़रमाया कि गलील जाकर मुझसे मिलो। अब यूहन्ना हमें गलील का एक वाक़िया सुनाता है। इससे हम कई सबक़ सीखते हैं। पहला सबक़,

अच्छे चरवाहे की पुकार सुनो

छः शागिर्द पतरस के साथ जमा थे। तब पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।” मछली पकड़ना तो उसका पेशा ही था। यह काम करते हुए वह परवान चढ़ा था।

दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएँगे।” वह निकलकर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। सुबह-सवेरे ईसा मसीह झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन धुँधलेपन में शागिर्दों ने उसे न पहचाना। उसने उनसे पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?”

आज ईसा मसीह किनारे पर खड़े हमें भी पुकार रहा है। शायद हम उसे अब तक धुँधलेपन में साफ़ पहचान नहीं सकते। हम अपने मामूल के काम में जुटे हैं मगर ख़ास बरकत हासिल नहीं हो रही। तब अच्छा है कि हम अच्छे चरवाहे की आवाज़ सुन लें। वह तो अपनी भेड़ों की फ़िक्र करता है।

► **क्या हम उसकी आवाज़ सुनते हैं?**

ईसा मसीह के सवाल पर शागिर्दों ने जवाब दिया कि अब तक कुछ नहीं मिला।

► **क्या शागिर्दों को ईसा मसीह के बिना मछलियाँ मिल गई थीं?**
एक भी नहीं। कितनी बार हम बड़ी मेहनत-मशक़्क़त करते हैं और कोई फल, कोई अच्छा नतीजा नज़र नहीं आता। ऐसे मौक़ों पर इनसान सोचता है कि क्या ख़ुदा मुझे सज़ा दे रहा है? मेरे दोस्त, पहले अच्छे चरवाहे की पुकार सुनो। दूसरा सबक़,

अच्छे चरवाहे की बरकत पाओ

ईसा मसीह ने कहा, “अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।” उन्होंने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि वह जाल कश्ती तक न ला सके।

► **जब ईसा मसीह ने साथ दिया, तो क्या उनको मछली मिल गई?**

हाँ, इतनी मछलियाँ कि जाल फटने का ख़तरा था।

तब यूहन्ना ने पतरस से कहा, “यह तो ख़ुदावंद है।” यूहन्ना, ईसा मसीह के बहुत क़रीब रहा था इसलिए उसे जल्द ही पता चल गया कि यह कौन है।

उसकी बात सुनते ही पतरस अपनी चादर ओढ़कर पानी में कूद पड़ा (उसने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था।) यूहन्ना समझने में तेज़ था जबकि पतरस क़दम उठाने में तेज़ था।

दूसरे शागिर्द कश्ती पर सवार उसके पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के फ़ासले पर। इसलिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में खींच खींचकर ख़ुश्की तक लाए। वह कश्ती से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। ईसा ने उनसे कहा, “उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।”

पतरस कश्ती पर गया और जाल को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा।

► **यूहन्ना हमें यह सारा माजरा इतनी तफ़सील से क्यों बताता है?** ईसा मसीह उन्हें एक अहम सबक़ सिखाना चाहता था। यह कि मेरे बिना तुम्हारा काम फलदार नहीं हो सकता चाहे तुम कितनी मेहनत-मशक़्क़त क्यों न करो। मैं ही अबदी ज़िंदगी का चश्मा हूँ। पल दर पल मेरी आवाज़ सुनो। तब ही बरकत की बारिश तुम पर बरसेगी। तब ही बरकत का जाल फटेगा नहीं। तीसरा सबक़,

अच्छे चरवाहे की तक़वियत पाओ

ईसा मसीह ने उनसे कहा, "आओ, नाश्ता कर लो।" किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की जुर्रत न की कि "आप कौन हैं?" क्योंकि वह तो जानते थे कि यह ख़ुदावंद ही है। फिर ईसा मसीह ने रोटी और मछली खिलाई।

यह कितनी अनोखी ज़ियाफ़त थी! उन्होंने कितनी बार अपने आक़ा के साथ खाना खाया था। बेशक उन्हें वह खाना भी याद आ रहा था जब ईसा मसीह ने पाँच रोटियों और दो मछलियों से पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाया था। उस वक़्त लोग जोश में आकर उसे दुनिया का बादशाह बनाना चाहते थे लेकिन वह चुपके से वहाँ से खिसक गया था। अब बात बिलकुल फ़रक़ थी। अब शागिर्दों के सामने आसमान का बादशाह खुले तौर से खड़ा था—वह जिसने फ़रमाया था,

> मैं ही ज़िंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक ज़िंदा रहेगा। (यूहन्ना 6:51)

अपनी क़ुरबानी से उसने इनसान को यह ज़िंदगी बख़्श दी थी—वह अबदी ज़िंदगी जो ईमानदार के दिल में होती है और जो उसे दरियाए-मौत के पार अच्छे चरवाहे की गोद में ले जाती है। लेकिन ईसा मसीह एक और बात भी दिखाना चाहता था। यह समझने के लिए आओ, हम एक सवाल पूछें :

► **क्या शागिर्दों के नाश्ते के लिए उनकी मछलियाँ ज़रूरी थीं?**
बिलकुल नहीं। जब शागिर्द झील के किनारे पर पहुँचे तो कोयलों पर मछली भुनी जा रही थी और साथ रोटी थी। फिर भी उसने फ़रमाया कि पकड़ी मछलियों में से कुछ खाने के लिए लाओ। वह इससे एक बात दिखाना चाहता था।

► **क्या बात दिखाना चाहता था?**
यह कि मुझे तुम्हारी ख़िदमत पसंद है। मैं चाहता हूँ कि तुम मिलकर मेरी ख़ातिर मेहनत-मशक़्क़त करो। बेशक अब से तुम मछली नहीं पकड़ोगे। अब से तुम माहीगीर के बजाए आदमगीर यानी लोगों को पकड़नेवाले होगे। किस तरह? उन्हें मेरे घरवाले बनने की दावत देने से। एक और सवाल उभर आता है :

► **ईसा मसीह शागिर्दों के साथ खाने की रिफ़ाक़त क्यों रखना चाहता था?**

वह चाहता था कि शागिर्द उसके हुज़ूर मिलकर खाना खाने की अहमियत समझें।

► **मिलकर उसके हुज़ूर खाना खाने की क्या अहमियत है?**

उसके हुज़ूर खाना खाना रिफ़ाक़त का सबसे गहरा निशान है।

► **यह क्यों सबसे गहरा निशान है?**

इसलिए कि यह उस आख़िरी खाने की तरफ़ इशारा है जो ईसा मसीह ने शागिर्दों के साथ खाया। उसके बारे में लिखा है,

> ईसा ने रोटी लेकर [...] कहा, "यह लो और खाओ। यह मेरा बदन है।" फिर उसने मै का प्याला [...] उन्हें देकर कहा, "तुम सब इसमें से पियो। यह मेरा ख़ून है, नए अहद का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उनके गुनाहों को माफ़ कर दिया जाए।"
> (मत्ती 26:26-29)

आज तक उसके हुज़ूर मिलकर खाना खाने से हम जो शागिर्द हैं इस खाने की याद करके वह ताक़त पाते हैं जो इस दुनिया में क़ायम रहने के लिए दरकार है। साथ साथ हम उस दिन की ख़ुशी मनाते हैं जब हम उसके साथ मिलकर उसके अबदी घर में ज़ियाफ़त करेंगे।

► **क्या आप अच्छे चरवाहे की यह तक़वियत पाते रहते हैं?**

चौथा सबक़,

अच्छे चरवाहे का प्यार क़बूल करो

खाना खाने के बाद ईसा मसीह पतरस से मुख़ातिब हुआ, “शमाऊन, क्या तू इनकी निसबत मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करता है?”

► **उसने यह क्यों पूछा?**

सलीबी मौत से पहले ईसा मसीह ने फ़रमाया था कि आज रात तुम सब मेरी बाबत बरगश्ता हो जाओगे। उस वक़्त पतरस ने एतराज़ किया था कि दूसरे बेशक सब बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा। मतलब है मैं दूसरों से ज़्यादा वफ़ादार हूँ। फिर भी उसने बाद में तीन बार कहा था कि मैं ईसा मसीह को नहीं जानता। यही वजह है कि ईसा मसीह ने पूछा कि क्या तू मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करता है?

देखो हमारे आक़ा की नरमी। उसने झिड़की न दी। इस नरम और सादा सवाल से ही वह पतरस सही पटरी पर लाया।

► **सही पटरी क्या थी?**

यह कि अपनी ताक़त और अपनी ही वफ़ादारी पर फ़ख़्र मत कर बल्कि उस काम पर जो मैंने तुझसे मुहब्बत रखने के बाइस किया है। पहले मेरा यह प्यार क़बूल कर। तब ही तू सही प्यार कर सकेगा—मुझे भी और दूसरों को भी। आइंदा मत ललकारना कि तू ही सब कुछ ठीक करेगा। आइंदा यह मान ले कि तू अपनी ताक़त से कुछ

नहीं कर सकता। आइंदा फ़रियाद कर कि ऐ ख़ुदावंद, मेरी मदद कर ताकि मैं तुझे प्यार कर सकूँ, तेरे पीछे चल सकूँ।

लेकिन ईसा मसीह को यह सारी बातें कहने की ज़रूरत नहीं है। वह बस यह पूछता है कि क्या तू मुझे प्यार करता है।

► **वह क्यों सिर्फ़ यह पूछता है कि क्या तू मुझे प्यार करता है?**

जो मसीह का घरवाला बन जाता है उसके रिश्ते का बंधन मुहब्बत है। मसीह का प्यार उसे मज़बूत कर देता है और जवाब में ही वह उसे और दूसरों को प्यार कर सकता है। पाँचवाँ सबक़,

अच्छे चरवाहे की फ़ितरत अपनाओ

पतरस ने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा मसीह बोला, "फिर मेरे लेलों को चरा।"

► **यह लेले कौन हैं?**

लेले वह सब हैं जो अच्छे चरवाहे की भेड़ें हैं।

► **चराने का क्या मतलब है?**

जिस तरह ईसा मसीह तमाम भेड़ों का अच्छा चरवाहा है उसी तरह वह चाहता है कि पतरस छोटे पैमाने पर चरवाहा हो। वह दूसरों से अच्छे चरवाहे का-सा सुलूक करे। हर शागिर्द को अच्छे चरवाहे की फ़ितरत अपनानी है।

► **अच्छा चरवाहा क्या करता है?**

वह अपनी भेड़ों की देख-भाल करता है। वह हर एक की फ़िकर करता है। इतनी फ़िकर कि उसने अपनी जान अपनी भेड़ों की ख़ातिर दी। सोच लो : अगर हर शागिर्द छोटे पैमाने पर अच्छे चरवाहे की फ़ितरत अपनाए तो कितना भला होगा। मिसाल के तौर पर अगर माँ-बाप अपने बच्चों के अच्छे चरवाहे हों तो क्या ख़ूब। लेकिन ध्यान दो : जो भी चरवाहा हो वह तब कामयाब होगा जब वह ईसा मसीह को प्यार करेगा। और वह तब ईसा मसीह को ठीक तरह से प्यार करेगा जब उसने उसका प्यार क़बूल किया होगा।

तब ईसा मसीह ने एक और मरतबा पूछा, "शमाऊन, क्या तू मुझसे मुहब्बत करता है?"

उसने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा मसीह बोला, "फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।" तीसरी बार उसने उससे पूछा, "शमाऊन, क्या तू मुझे प्यार करता है?"

तीसरी बार यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, "ख़ुदावंद, आपको सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा मसीह ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चरा।"

► **उसने यह सवाल तीन बार क्यों पूछा?**

पतरस ने तीन बार कहा था कि मैं ईसा मसीह को नहीं जानता। इसलिए ईसा मसीह ने तीन बार यह सवाल पूछा। यह ईसा मसीह का हमसे सवाल भी है। बेशक हम सबसे बार बार ग़लतियाँ होती रहती हैं। बेशक हम अपनी हरकतों से कई बार उसे दुख पहुँचाते हैं। लेकिन वह हमें झिड़की नहीं देता। वह बस यही सवाल पूछता रहता है कि क्या तू मुझे प्यार करता है? उससे मुहब्बत सब कुछ है। अगर यह प्यार न हो तो सब कुछ बकवास है, चाहे हम कितना अच्छा काम क्यों न करें। इसलिए लाज़िम है कि हम अपनी कमज़ोरी को मानकर उसका प्यार क़बूल करें और पतरस के साथ कहें कि ऐ ख़ुदावंद, तू तो जानता है कि मैं तुझे प्यार करता हूँ। तब ही वह हमें अच्छे चरवाहे की फ़ितरत देता है, वह फ़ितरत जो उसकी मदद के बग़ैर हमारे अंदर नहीं होती। तब ही वह हमें वह बरकत देता है जो हम अपने ज़ोर से पा नहीं सकते। कई बार उसकी फ़ितरत को अपनाने से बहुत सख़्त नतीजे निकल सकते हैं।

प्यार करने का एक नतीजा

ईसा मसीह ने फ़रमाया, “मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू ख़ुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता घूमता-फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।” (यह

बात इस तरफ़ इशारा थी कि पतरस किस क़िस्म की मौत से अल्लाह को जलाल देगा।) फिर उसने उसे बताया, "मेरे पीछे चल।"

► **ईसा मसीह यह कहने से किस तरफ़ इशारा कर रहा था?**

बाद में पतरस शहीद हो जाएगा। क़दीम तारीख़ी गवाह लिखते हैं कि कुछ साल के बाद उसे सलीब पर चढ़ाया गया। अच्छे चरवाहे के क़दमों में चलने से यही नतीजा निकला।

► **आख़िर में मसीह ने क्या हिदायत दी?**

मेरे पीछे चल। यह सही प्यार है। जो ईसा मसीह को प्यार करता है वह उसके पीछे चलता है। भेड़ अपने अच्छे चरवाहे की आवाज़ सुनकर उसके पीछे चलती है। उसे पूरा भरोसा है कि जहाँ चरवाहा चलता है वहाँ मैं महफ़ूज़ हूँ, चाहे यह रास्ता सलीब का रास्ता क्यों न हो। छटा सबक़,

आपसी जलन छोड़ दो

पतरस ने मुड़कर देखा कि यूहन्ना उनके पीछे चल रहा है। उसने सवाल किया, "ख़ुदावंद, इसके साथ क्या होगा?"

► **पतरस ने यह क्यों पूछा?**

यूहन्ना, पतरस की तरह ईसा मसीह के बहुत क़रीब था। पतरस चाहता था कि अब ईसा मसीह, यूहन्ना के मुस्तक़बिल के बारे में भी कुछ बताए। यानी क्या उसे भी शहादत का जलाल मिलेगा?

लेकिन मसीह ने ऐसा न किया। उसने जवाब दिया, "अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।"

► **क्या उसने यूहन्ना के बारे में कुछ बताया?**

नहीं। उसने कहा कि तुझे क्या? मतलब है दूसरों की तरफ़ मत देखना कि उनके साथ क्या होगा। अपने आप पर ध्यान दे। मेरे पीछे चलता रह। कितनी अच्छी हिदायत! हम सब हमेशा इस ख़तरे में होते हैं कि अपने आपका मुक़ाबला अपने साथियों से करें। इससे हममें एहसासे-कमतरी, हसद या अपने आप पर फ़ख़्र पैदा होता है। मसीह बस एक ही चीज़ हमसे चाहता है—यह कि हम उसे प्यार करके उसके पीछे चलें। कि हम अच्छे चरवाहे की आवाज़ सुनकर पूरे भरोसे के साथ उसके क़दमों में चलें।

कुछ लोगों ने यह बात सुनकर ग़लत नतीजा निकाला—यह कि यूहन्ना नहीं मरेगा। लेकिन ईसा मसीह ने यह बात नहीं की थी। उसने सिर्फ़ यह कहा था, "अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या?"

अब देखो हम इनसानों की ग़लत सोच। बाद में लोग अंदाज़ा लगाने लगे कि यूहन्ना, मसीह के वापस आने तक ज़िंदा रहेगा। उनको इस पर ध्यान देना चाहिए था कि हम ख़ुद किस तरह उसे प्यार करते हैं, हम ख़ुद किस तरह उसके पीछे चलते हैं। मसीह तो यह कहने

से इस पर ज़ोर दे रहा था कि यूहन्ना की फ़िकर मत करना बल्कि अपनी ही फ़िकर कर कि क्या मैं अच्छे चरवाहे को प्यार करता हूँ, क्या मैं उसके पीछे चल रहा हूँ? फिर भी उनमें से कुछ इस साफ़ बात से फ़ज़ूल नतीजे निकालने लगे थे। आख़िरी सबक़,

अच्छे चरवाहे की सच्चाई अपनाओ

फिर यूहन्ना लिखता है,

> यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की गवाही देकर इन्हें क़लमबंद कर दिया है। और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है। (यूहन्ना 21:24)

► **यूहन्ना किस बात पर ज़ोर देता है?**

एक बार फिर यूहन्ना इस पर ज़ोर देता है कि जो कुछ मैंने सुनाया है वह मैंने अपनी आँखों से देखा है। इस पर और ज़ोर देने के लिए वह फ़रमाता है कि हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है। जब वह 'हम' कहता है तो मतलब यह है कि यह न सिर्फ़ मेरी गवाही है। बहुत-सारे लोगों ने इसकी तसदीक़ की है। अगर मैं कोई ग़लत बात क़लमबंद करता तो वह ज़रूर एतराज़ करते। इसलिए वह इस पर ज़ोर देता है कि **हम** जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है।

यह बात हमें आख़िर में याद दिलाती है कि जो अच्छे चरवाहे का सच्चा शागिर्द है उसकी ज़िंदगी की बुनियाद और मरकज़ सच्चाई है। उसकी ज़िंदगी में झूठ के लिए कोई जगह नहीं है।

► **क्या आपकी ज़िंदगी इस सच्चाई पर मबनी है?**

सच्चाई ही हमारे कानों को खोल देती है ताकि हम अच्छे चरवाहे की पुकार सुन सकें, उसकी बरकत और तक़वियत पा सकें, उसका प्यार क़बूल करके उसकी फ़ितरत अपना सकें और आपसी जलन के बाइस डूब न जाएँ। आमीन।

इंजील, यूहन्ना 21

झील पर

इसके बाद ईसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ जब वह तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यों हुआ। कुछ शागिर्द शमाऊन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतनेल जो गलील के क़ाना से था, ज़बदी के दो बेटे और मज़ीद दो शागिर्द।

शमाऊन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।”

दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएँगे।” चुनाँचे वह निकलकर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न

आई। सुबह-सवेरे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि वह ईसा ही है। उसने उनसे पूछा, "बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?"

उन्होंने जवाब दिया, "नहीं।" उसने कहा, "अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।" उन्होंने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि वह जाल कश्ती तक न ला सके।

इस पर ख़ुदावंद के प्यारे शागिर्द ने पतरस से कहा, "यह तो ख़ुदावंद है।" यह सुनते ही कि ख़ुदावंद है शमाऊन पतरस अपनी चादर ओढ़कर पानी में कूद पड़ा (उसने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था।) दूसरे शागिर्द कश्ती पर सवार उसके पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के फ़ासले पर थे। इसलिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में खींच खींचकर ख़ुश्की तक लाए। जब वह कश्ती से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। ईसा ने उनसे कहा, "उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।"

शमाऊन पतरस कश्ती पर गया और जाल को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। ईसा ने उनसे कहा, "आओ, नाश्ता कर लो।" किसी

भी शागिर्द ने सवाल करने की जुर्रत न की कि “आप कौन हैं?” क्योंकि वह तो जानते थे कि यह ख़ुदावंद ही है। फिर ईसा आया और रोटी लेकर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई। ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार थी कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ।

पतरस से सवाल

नाश्ते के बाद ईसा शमाऊन पतरस से मुख़ातिब हुआ, “यूहन्ना के बेटे शमाऊन, क्या तू इनकी निसबत मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करता है?”

उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा बोला, “फिर मेरे लेलों को चरा।” तब ईसा ने एक और मरतबा पूछा, “शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझसे मुहब्बत करता है?”

उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा बोला, “फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।” तीसरी बार ईसा ने उससे पूछा, “शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?”

तीसरी दफ़ा यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, “ख़ुदावंद, आपको सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा ने उससे कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।

मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू ख़ुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता घूमता-फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।” (ईसा की यह बात इस तरफ़ इशारा थी कि पतरस किस क़िस्म की मौत से अल्लाह को जलाल देगा।) फिर उसने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।”

दूसरा शागिर्द

पतरस ने मुड़कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को प्यारा था वह उनके पीछे चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिसने शाम के खाने के दौरान ईसा की तरफ़ सर झुकाकर पूछा था, “ख़ुदावंद, कौन आपको दुश्मन के हवाले करेगा?” अब उसे देखकर पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावंद, इसके साथ क्या होगा?”

ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।”

नतीजे में भाइयों में यह ख़याल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की थी। उसने सिर्फ़ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या?”

यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की गवाही देकर इन्हें क़लमबंद कर दिया है। और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है।

ख़ुलासा

ईसा ने इसके अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उसका हर काम क़लमबंद किया जाता तो मेरे ख़याल में पूरी दुनिया में यह किताबें रखने की गुंजाइश न होती।